भारतीय धर्मों का इतिहास—ग्रन्थ—१

वैष्णव, शैव
और
अन्य धार्मिक मत

लेखक

रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर

अनुवादक

महेश्वरी प्रसाद

प्राध्यापक, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति व पुरातत्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

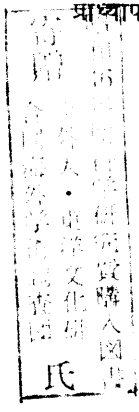

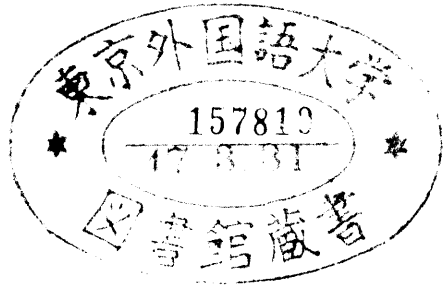

भारतीय विद्या प्रकाशन
वाराणसी

ऋग्वेदीय देवताओं को केवल प्राकृतिक उपकरणों का मानवीकरण मानना इस प्रवृत्ति का निदर्शन है। इस अन्तराल में धर्म के अध्ययन की विधियाँ अनेकशः विकसित हुईं और सम्प्रति धर्म का समाज-वैज्ञानिक अध्ययन जनप्रिय हो गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ से लेकर जी० एस० घुर्ये के 'रिलीजन एण्ड मैन' तक धर्म के अध्ययन-विधि का एक लम्बा सोपान है। भण्डारकर के इस ग्रन्थ के मूल प्रकाशन के बाद कुछ नवीन पुरातात्त्विक सामग्री भी प्राप्त हुई है। सैन्धव सभ्यता के प्रकाशन ने भारतीय संस्कृति के अध्ययन में एक नया आयाम जोड़ा है। फिर भी इस ग्रन्थ के निष्कर्ष अद्यावधि मान्य हैं।

भण्डारकार के निष्कर्ष नपे-तुले हैं। उनका आदर्श न्यायाधीश का है। उनकी दृष्टि व्यापक है और उनकी शैली समीक्षात्मक है। धर्म का इतिहास लिखने में उन्होंने साहित्य, अभिलेख, मुद्रा तथा शिल्प इन सभी साधनों का उपयोग किया है और यथास्थान प्रमाण के प्रामाण्य एवं तिथि पर भी विचार किया है। इन्हीं सब कारणों से भाण्डारकर की प्रस्तुत कृति अब तक भारती-विद्या के क्षेत्र में पूर्ववत् अपना स्थान बनाए हुए है। ऐसी कृतियाँ राष्ट्रभाषा में अवश्यमेव अनूदित होनी चाहिए।

प्रस्तुत अनुवाद में इस बात का बराबर ध्यान रखा गया है कि मूल पुस्तक के गुण अनुवाद में खो न जायें। फिर भी सुधी-जनों के सुझावों का स्वागत किया जायेगा।

१५ अगस्त, १९६७
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

महेश्वरी प्रसाद

विषय-सूची

१

वैष्णवधर्म	...	१
नवीन भक्तिमार्ग का उदय	...	३
महाभारत के नारायणीय पर्व का विश्लेषण	...	५
सात्वत और उनका धर्म	...	९
भगवद्गीता का सारांश	...	१५
भगवद्गीता के धर्म के स्रोत	...	३०
नारायण से वासुदेव का तादात्म्य	...	३५
विष्णु से वासुदेव का तादात्म्य	...	३८
गोपाल-कृष्ण से वासुदेव का तादात्म्य	...	४०
पाञ्चरात्र या भागवत मत	...	४४
विष्णु या नारायण के अवतार	...	४७
उत्तरकालीन भागवत-मत और वैष्णव धर्म	...	४७
रामोपासना	...	५३
दक्षिण में वासुदेवोपासना या वैष्णवधर्म	...	५५
रामानुज	...	५७
मध्व या आनन्दतीर्थ	...	६५
निम्बार्क	...	७०
रामानन्द	...	७५
कबीर	...	७७
अन्य रामानन्दी	...	८४
तुलसीदास	...	८५
वल्लभ	...	८८
चैतन्य	...	९४
वैष्णव धर्म का अपकर्ष	...	९८
नामदेव और तुकाराम	...	९९
उपसंहार	...	११३

२

शैवधर्म	...	११५
रुद्र-विषयक कल्पना का उदय	...	११७
रुद्र-विषयक कल्पना का विकास	...	११७
श्वेताश्वतर और अथर्वशिरस् उपनिषद्	...	१२२
महाभारत में रुद्र-शिव एवं लिंग-पूजा	...	१२९
शैव सम्प्रदायों का उदय और विस्तार तथा शिव-पूजकों की श्रेणियाँ	...	१३२
शैव-सम्प्रदाय एवं उनके सिद्धान्त	...	१३६
पाशुपत	...	१३७
शैवसिद्धान्त	...	१४२
कापालिक और कालामुख सम्प्रदाय	...	१४५
काश्मीरी शैव-मत	...	१४७
वीरशैव या लिंगायत सम्प्रदाय	...	१५०
द्रविड़ प्रदेश में शैवधर्म	...	१६०
शाक्त	...	१६३
गाणपत्य सम्प्रदाय	...	१६८
स्कन्द-कार्तिकेय	...	१७२
सौर सम्प्रदाय और उदीच्य सूर्य-पूजा	...	१७४
उपसंहार	...	१७८

३

देववाद और विश्वात्मवाद	...	१८३
अनुक्रमणिका	...	१८९

संकेत-सारिणी

अ० उ०	= अथर्वशिरस् उपनिषद्
अ० वे०	= अथर्ववेद
आ० गृ०	= आश्वलायन गृह्यसूत्र
इण्डि० एण्टि०	= इण्डियन एण्टिक्वेरी
ऋ० वे०	= ऋग्वेद
ऋ० वे० सं०	= ऋग्वेद संहिता
एपि० इण्डि०	= एपिग्राफिया इण्डिका
ऐ० ब्रा०	= ऐतरेय ब्राह्मण
ओ० एस० टी०	= ओल्ड संस्कृत टेक्ट्स
क० उ०	= कठ उपनिषद्
के० उ०	= केन उपनिषद्
कौ० ब्रा०	= कौषीतकि ब्राह्मण
कौ० ब्रा० उ०	= कौषीतकि ब्राह्मण उपनिषद्
जे० आर० ए० एस०	= जनरल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी
जे० बी० बी० आर० ए० एस०	= जनरल ऑफ बाम्बे ब्राञ्च ऑव रॉयल एशियाटिक सोसायटी
छा० उ०	= छान्दोग्य उपनिषद्
तै० आ०	= तैत्तिरीय आरण्यक
तै० उ०	= तैत्तिरीय उपनिषद्
तै० सं०	= तैत्तिरीय संहिता
पा० गृ०	= पारस्कर गृह्यसूत्र
बि० इ०	= बिब्लियोथिका इण्डिका
बृ० उ०	= बृहदारण्यक उपनिषद्
बृ० सं०	= बृहत्-संहिता
ब्र० सू०	= ब्रह्मसूत्र
भ० गी०	= भगवद्गीता
महा०	= महाभारत
मु० उ०	= मुण्डक उपनिषद्
मै० उ०	= मैत्रायणी उपनिषद्